IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम का समन्वय: एक अध्ययन

1Gyan Prakash Yadav, 2Dr. Sanobar Haider

1Research Scholar, 2Assistant Professor

1Lucknow University,

2Govt. Degree College Kuchlai, Sitapur UP

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम बौद्धिक धरोहरों में से एक है, जिसने शिक्षा को केवल जानकारी के संकलन तक सीमित न रखकर जीवन, समाज और संस्कृति के साथ जोड़ा। इसमें वेद, उपनिषद, पुराण, आयुर्वेद, योग, दर्शन, साहित्य और गणित से लेकर राजनीति और अर्थशास्त्र तक व्यापक ज्ञान की परंपरा विद्यमान रही है। आधुनिक उच्च शिक्षा, जो प्रायः पश्चिमी प्रतिमानों पर आधारित है, आज वैश्विक प्रतिस्पर्धा और तकनीकी प्रगति के दबाव में मूल्य, नैतिकता और जीवन के समग्र दृष्टिकोण से विमुख होती जा रही है। इस संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश शिक्षा को केवल रोजगारपरक नहीं, बल्कि जीवनपरक और समाजपरक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस आवश्यकता को रेखांकित करते हुए भारतीय भाषाओं, संस्कृति और परंपरा को उच्च शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस शोधपत्र में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट करने का प्रयास है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा में बहुविषयकता, मूल्यनिष्ठा, वैश्विक दृष्टि और आत्मनिर्भरता को कैसे प्रोत्साहित कर सकती है। साथ ही यह भी रेखांकित किया गया है कि इसके समन्वय में शिक्षक प्रशिक्षण, शोध की गुणवत्ता और पाठ्य सामग्री की उपलब्धता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, जिन्हें दूर करने के लिए ठोस प्रयास आवश्यक हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और

आधुनिक उच्च शिक्षा का संतुलित समन्वय, भारत को ज्ञान–महाशक्ति बनाने की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, आधुनिक उच्च शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बहुविषयकता,मूल्यनिष्ठ शिक्षा

प्रस्तावना

भारत की सभ्यता उन विरले सभ्यताओं में से एक है , जिसने न केवल सहस्त्राब्दियों तक स्वयं को जीवित रखा बल्कि निरंतर विकसित होते हुए ज्ञान और विचार की धारा को भी सशक्त बनाया। यदि हम वैश्विक इतिहास पर दृष्टि डालें तो पाएँगे कि मिस्र, मेसोपोटामिया और यूनान जैसी कई प्राचीन सभ्यताएँ अपने उत्कर्ष काल के बाद विलुप्त हो गईं, परंतु भारत की ज्ञान परंपरा निरंतरता और पुनर्नवीनता (continuity and renewal) दोनों का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है। वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, वास्तुशास्त्र, दर्शन, नाट्यशास्त्र और लोक-ज्ञान परंपराएँ केवल अतीत की उपलब्धियाँ नहीं रही हैं, बल्कि उन्होंने समाज को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—धर्म, अर्थ, राजनीति, स्वास्थ्य, पर्यावरण और नैतिकता—में दिशा दी है।[1] इसीलिए भारतीय चिंतन को केवल 'धार्मिक' या 'सांस्कृतिक' उपलब्धि मानना अधूरा दृष्टिकोण है; वास्तव में यह मानव सभ्यता के लिए एक ज्ञान-विरासत (knowledge legacy) है। आधुनिक समय में जब उच्च शिक्षा वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और तकनीकी क्रांति के दबाव में है, तब यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी प्रासंगिक है या केवल गौरवमयी अतीत की स्मृति मात्र? विशेषकर तब जब भारत का उच्च शिक्षा तंत्र एक ओर विश्व की सबसे बड़ी विद्यार्थी आबादी को समेटे हुए है और दूसरी ओर गुणवत्ता, employability तथा सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है। आधुनिक शिक्षा का स्वरूप अक्सर पश्चिमी प्रतिमानों पर आधारित होता है, जिसमें विज्ञान, तकनीकी और प्रबंधन की गहरी उपस्थिति है, परंतु मूल्य-आधारित दृष्टिकोण और सांस्कृतिक संवेदनाएँ अपेक्षाकृत कमज़ोर हैं। यही वह बिंदु है जहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय अत्यंत सार्थक सिद्ध हो सकता है। यह परंपरा न केवल जीवन को समग्र दृष्टि से देखने की प्रेरणा देती है बल्कि आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को भी मानवीय और सतत विकास की दिशा में प्रयुक्त करने का मार्ग सुझाती है। उदाहरणस्वरूप, आयुर्वेद और योग जैसी प्राचीन चिकित्सा-प्रणालियाँ आज आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के पूरक के रूप में वैश्विक स्तर पर स्वीकार की जा रही हैं। इसी प्रकार शून्य और दशमलव पद्धति, ज्यामिति और खगोलशास्त्र के सिद्धांत, पर्यावरण संतुलन की अवधारणा और दर्शन की तार्किक परंपराएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी सदियों पहले थीं।

[1] प्राचीन भारत में शिक्षा की शुरुआत वेदों और उपनिषदों से हुई, जहाँ गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान संचार होता था।[1]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर दिया है। यह नीति केवल आधुनिक विज्ञान और कौशल पर केंद्रित न होकर भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के मूल ढाँचे में शामिल करने का प्रस्ताव करती है। इसमें कहा गया है कि भारतीय शिक्षा की विशिष्टता तभी उजागर होगी जब उसमें अपनी जड़ों और सांस्कृतिक आत्मा का समावेश हो। यह केवल अतीत का गौरव गान नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए ज्ञान-संलयन (knowledge integration) की ठोस रणनीति है।इस शोधपत्र का उद्देश्य यही है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक उच्च शिक्षा के बीच किस प्रकार समन्वय स्थापित हो सकता है, उसके प्रभाव और परिणाम क्या होंगे, तथा किन चुनौतियों का समाधान आवश्यक है। यह अध्ययन यह भी दिखाने का प्रयास करेगा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन केवल सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न नहीं बल्कि एक वैश्विक शैक्षिक योगदान है। आज जब विश्व टिकाऊ विकास, मानवीय मूल्यों और नैतिकता की ओर पुनः ध्यान दे रहा है, तब भारत के पास अपनी प्राचीन परंपरा से प्रेरित एक वैकल्पिक शैक्षिक दृष्टि प्रस्तुत करने का अवसर है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का वैचारिक आधार

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप विशिष्ट और बहुआयामी है। यह केवल शास्त्रों और ग्रंथों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलू में प्रत्यक्ष अनुभव और व्यावहारिकता से जुड़ा हुआ है। जहाँ पश्चिमी ज्ञान परंपरा में विषयों को अक्सर अलग-अलग खंडों में विभाजित करके देखा गया, वहीं भारतीय दृष्टि ने ज्ञान को एक समग्र (holistic) रूप में समझा। इसीलिए यहाँ 'विद्या' का अर्थ केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि आत्मबोध, नैतिकता और समाजहित से भी जुड़ा रहा। वेद और उपनिषद इस बात पर बल देते हैं कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक ही सत्ता का विविध रूप है—"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।" इसका तात्पर्य यह है कि गणित, चिकित्सा, कला, राजनीति, दर्शन और अध्यात्म जैसे सभी क्षेत्रों को खंडों में विभाजित करके नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इसी दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक interdisciplinary शिक्षा की पूर्वपीठिका माना जा सकता है। भारतीय दर्शन की छह शास्त्रीय परंपराएँ—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत—ज्ञान के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करती हैं। न्याय और वैशेषिक तर्कशास्त्र के माध्यम से वस्तुओं की यथार्थता और प्रमाण पर बल देते हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण का आधार है। सांख्य और योग मनुष्य की चेतना और अनुभव पर केंद्रित रहते हैं, जो आधुनिक मनोविज्ञान से तुलनीय हैं, जबकि वेदांत आत्मा और ब्रह्म के ज्ञान की चर्चा करता है, जो आज की value-education और ethics के निकट है। यही नहीं, भारतीय ज्ञान परंपरा व्यावहारिकता पर भी उतना ही बल देती रही। आयुर्वेद ने स्वास्थ्य को

केवल शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के रूप में परिभाषित किया।[2] वास्तुशास्त्र ने भवन निर्माण को केवल तकनीकी कार्य नहीं, बल्कि प्राकृतिक ऊर्जा और मानवीय जीवनशैली से जोड़कर देखा। नाट्यशास्त्र ने नाटक, संगीत और नृत्य को शिक्षा और समाज-संशोधन का प्रभावी साधन बनाया। इस प्रकार भारतीय ज्ञान का स्वरूप केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि सीधे समाज और जीवन के व्यवहार में उतरने वाला रहा। गणित और खगोल विज्ञान में भी भारत का योगदान अद्वितीय है। शून्य (zero), दशमलव प्रणाली, बीजगणित और त्रिकोणमिति के अनेक सूत्र भारतीय गणितज्ञों की ही देन हैं। आर्यभट[3] ने पृथ्वी की परिक्रमा और ग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या की, जबकि भास्कराचार्य ने differential calculus की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसे बाद में यूरोप में पुनः खोजा गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय परंपरा में ज्ञान का आधार तर्क, गणना और प्रत्यक्ष अवलोकन पर था। साथ ही, भारतीय ज्ञान परंपरा केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं रही, बल्कि नैतिकता और मूल्य उसमें केन्द्रीय रहे। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चार पुरुषार्थों की संतुलित अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्य और नैतिकता का होना आवश्यक है। इसी संतुलन ने शिक्षा को जीवनोपयोगी और समाजोपयोगी बनाया।

प्रकृति और पर्यावरण को लेकर भारतीय दृष्टि भी अत्यंत प्रगतिशील रही है। यजुर्वेद का मंत्र—"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"—यह दर्शाता है कि मानव और प्रकृति का संबंध केवल उपभोग का नहीं, बल्कि संरक्षण और सह-अस्तित्व का है। यह विचार आधुनिक 'सतत विकास' (sustainable development) की अवधारणा के समान है, जो आज जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट से जूझती दुनिया के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। शिक्षा के उद्देश्य के संदर्भ में भी भारतीय दृष्टिकोण विशिष्ट है। यहाँ शिक्षा का लक्ष्य केवल आजीविका नहीं बल्कि आत्म-विकास और लोकमंगल रहा। तैत्तिरीय उपनिषद् का सूत्र—"सत्यं वद, धर्मं चर"—यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य सत्यनिष्ठ, धर्मपरायण और समाजहितैषी नागरिक बनाना है। गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक समग्र विकास इसी दृष्टि का प्रमाण है।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा का वैचारिक आधार इस बात में निहित है कि ज्ञान केवल बौद्धिक अभ्यास नहीं बल्कि जीवन का आधार है। इसमें तर्क और अनुभव दोनों का स्थान है, व्यावहारिकता और नैतिकता दोनों का समन्वय है, तथा व्यक्ति और समाज दोनों की उन्नति इसका लक्ष्य है। यही विशिष्टताएँ यदि आधुनिक उच्च शिक्षा में समाहित हों

[2] आयुर्वेद का ग्रंथ चरक संहिता आज भी चिकित्सा-विज्ञान में मार्गदर्शक है

[3] आर्यभट ने शून्य और दशमलव प्रणाली का आविष्कार किया।

तो वह न केवल अधिक जीवंत और मूल्य-सम्पन्न बनेगी बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारतीय शिक्षा की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को सिद्ध करेगी।

आधुनिक उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता यही रही है कि उसने जीवन को समग्रता से देखा और शिक्षा को केवल रोजगार या औद्योगिक आवश्यकता तक सीमित नहीं किया। लेकिन आधुनिक उच्च शिक्षा का ढाँचा, विशेष रूप से औपनिवेशिक काल से प्रभावित विश्वविद्यालय प्रणाली, लंबे समय तक पश्चिमी अनुकरण में चलता रहा। इसमें ज्ञान का स्वरूप खंडित हो गया और शिक्षा का उद्देश्य नौकरी तक सिमटने लगा। इस पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक उच्च शिक्षा को जोड़ने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल की है।[4]

नीति के अंतर्गत यह स्पष्ट किया गया है कि छात्रों को भारतीय भाषाओं, साहित्य, कला, संस्कृति और दर्शन के साथ-साथ गणित, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में भी भारतीय योगदानों से परिचित कराया जाएगा। उदाहरण के लिए आयुर्वेद, योग और भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को स्वास्थ्य शिक्षा से जोड़ा जा रहा है। भारतीय गणितज्ञों और खगोलविदों के योगदान को गणित और विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित करने की पहल हुई है। इससे शिक्षा का दृष्टिकोण केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक गहराई से भी जुड़ता है। आज उच्च शिक्षा में interdisciplinary approach को विशेष महत्व दिया जा रहा है। यह वही दृष्टि है जिसे भारतीय परंपरा सदियों से अपनाती आई थी। सांख्य और योग चेतना की गहराई में उतरते हैं तो न्याय और वैशेषिक प्रमाण और तर्क का आग्रह करते हैं। जब इन दोनों का संतुलन आधुनिक शिक्षा में होगा तो छात्र केवल नौकरी के लिए नहीं बल्कि समग्र चिंतन के लिए भी तैयार होंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक और महत्वपूर्ण पहलू नैतिकता और मूल्य-आधारित शिक्षा है। आज की उच्च शिक्षा, विशेष रूप से तकनीकी और प्रबंधन क्षेत्र, कई बार नैतिक आधार से शून्य प्रतीत होते हैं। यही कारण है कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, पर्यावरण का दोहन और सामाजिक असमानताएँ बढ़ रही हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन पर बल देती है। जब यह दृष्टि उच्च शिक्षा में आएगी तो केवल आर्थिक समृद्धि ही नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदनाएँ भी मजबूत होंगी।

[4]NEP 2020 ने भारतीय भाषाओं और परंपराओं को उच्च शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर ज़ोर दिया।

इसके अतिरिक्त पर्यावरण और सतत विकास जैसे मुद्दों पर भी भारतीय परंपरा समकालीन शिक्षा को मार्गदर्शन देती है। आज जब जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया के लिए संकट बन गया है, तब वेदों और उपनिषदों में निहित "प्रकृति को माता" मानने वाली दृष्टि शिक्षा के लिए नई दिशा प्रदान कर सकती है। छात्रों में यदि यह समझ विकसित हो कि मानव और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक हैं, तो सतत विकास केवल नारा नहीं बल्कि जीवन-दृष्टि बन सकेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक अनुसंधान

शिक्षा केवल जानकारी का संग्रह भर नहीं है, बल्कि निरंतर जिज्ञासा और अनुसंधान का आधार भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यही रहा है कि उसने प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता को सदैव सम्मान दिया। उपनिषदों का पूरा साहित्य 'प्रश्न–उत्तर' की परंपरा पर आधारित है। याज्ञवल्क्य और गार्गी के संवाद, अथवा नचिकेता और यमराज का प्रश्नोत्तर, इस तथ्य की गवाही देते हैं कि यहाँ अनुसंधान का अर्थ केवल प्रयोगशाला तक सीमित न होकर सत्य की खोज के व्यापक संदर्भ से जुड़ा था। आधुनिक उच्च शिक्षा में अनुसंधान का ढाँचा प्रायः पाश्चात्य प्रतिमानों पर आधारित है, जहाँ विज्ञान और तकनीक को ही सर्वोपरि माना गया। इसमें निःसंदेह भारत ने भी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कीं, परंतु यह ढाँचा अक्सर मानविकी और दर्शन के अनुसंधान को हाशिये पर डाल देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश इस असंतुलन को दूर करने की क्षमता रखता है। यहाँ अनुसंधान केवल प्रयोगात्मक तथ्य का अन्वेषण नहीं, बल्कि जीवन, समाज और ब्रह्मांड की गहन समझ का माध्यम है। उदाहरण के लिए, गणित और खगोल विज्ञान में आर्यभट्ट, भास्कराचार्य और वराहमिहिर की परंपरा आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए आज भी प्रेरणा स्रोत है। शून्य और दशमलव पद्धति का विकास, ग्रहों की गति का सटीक निर्धारण और बीजगणित की जटिल अवधारणाएँ—ये सब भारतीय शोध परंपरा की ही देन हैं। यदि इन्हें आधुनिक उच्च शिक्षा और अनुसंधान पद्धतियों में पुनः स्थापित किया जाए, तो छात्र यह अनुभव करेंगे कि नवाचार (innovation) केवल पाश्चात्य जगत की देन नहीं है, बल्कि भारत की अपनी सांस्कृतिक धरोहर भी उतनी ही समृद्ध है।

इसी प्रकार चिकित्सा और जीवन-विज्ञान के क्षेत्र में आयुर्वेद एक संपूर्ण वैज्ञानिक पद्धति है। आज जब विश्वभर में integrative medicine और holistic health पर अनुसंधान हो रहा है, तब आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल चिकित्सा विज्ञान को नए आयाम देगा, बल्कि भारत को वैश्विक स्वास्थ्य क्षेत्र में नेतृत्व की स्थिति भी प्रदान करेगा।

भारतीय अनुसंधान परंपरा का एक और पहलू है—नैतिकता और मूल्याधारित शोध दृष्टि। आधुनिक समय में कई बार यह देखा गया है कि अनुसंधान केवल व्यावसायिक हितों और कॉर्पोरेट दबावों के अधीन हो जाता है। दवाओं, तकनीकी आविष्कारों और पर्यावरणीय शोधों में इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मिलता है। इसके विपरीत, भारतीय दृष्टि अनुसंधान को लोक–मंगल और सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से जोड़ती है। यदि उच्च शिक्षा संस्थान इस दृष्टिकोण को अपनाएँ, तो अनुसंधान केवल आर्थिक लाभ का साधन न रहकर मानवता के कल्याण का उपकरण बनेगा। इसके साथ ही, भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुभव और अंतर्दृष्टि को भी शोध का आधार माना गया। आज की वैज्ञानिक पद्धति जहाँ 'अवलोकन और प्रयोग' पर बल देती है, वहीं भारतीय परंपरा 'अनुभवजन्य सत्य' और 'आत्मानुभूति' को भी महत्त्वपूर्ण मानती थी। आधुनिक उच्च शिक्षा में यदि इन दोनों पद्धतियों का संतुलन हो, तो अनुसंधान कहीं अधिक व्यापक और बहुआयामी हो सकता है।

यह भी उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' को अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र के रूप में मान्यता दी गई है। इसके तहत विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में भारतीय दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला और सामाजिक चिंतन पर केंद्रित शोध परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह प्रयास केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा में भारतीय दृष्टिकोण से शोध की नई संभावनाओं का द्वार खोलना है।अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक अनुसंधान का समन्वय न केवल शिक्षा को गहराई देगा, बल्कि भारत को वैश्विक बौद्धिक नेतृत्व की भूमिका में भी स्थापित करेगा। यह समन्वय अनुसंधान को यांत्रिक और नीरस प्रक्रिया से निकालकर उसे मानवीय, सृजनशील और व्यापक दृष्टि से संपन्न बनाएगा। भारतीय ज्ञान परंपरा को उच्च शिक्षा में समाहित करने से न केवल भारतीय पहचान का पुनर्निर्माण होगा बल्कि वैश्विक स्तर पर शिक्षा को नया वैचारिक योगदान मिलेगा। पश्चिमी देशों में आज 'mindfulness', 'holistic education' और 'value-based learning' की जो अवधारणाएँ लोकप्रिय हो रही हैं, वे मूलतः भारतीय चिंतन से प्रेरित हैं। यदि भारत अपने ही ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा में आत्मविश्वास के साथ अपनाए, तो वह विश्व शिक्षा जगत को वैकल्पिक और अधिक मानवीय मॉडल प्रदान कर सकता है।इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक उच्च शिक्षा का समन्वय केवल शैक्षणिक प्रयोग नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह विद्यार्थियों को जड़ों से जोड़कर वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगा और शिक्षा को केवल सूचना तक सीमित न रखकर ज्ञान और जीवन-मूल्यों से संपन्न बनाएगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिकता-आधारित शिक्षा

शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल पेशेवर कौशल अर्जित करना नहीं[5], बल्कि एक जिम्मेदार और नैतिक नागरिक का निर्माण करना भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल यही रहा है कि ज्ञान को चरित्र और मूल्य के साथ जोड़ा जाए। उपनिषदों में 'सत्यं वद, धर्मं चर' जैसे वाक्य शिक्षा के नैतिक आधार को स्पष्ट करते हैं। तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों में ज्ञान का अर्जन केवल बौद्धिक विस्तार तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से नैतिकता, अनुशासन और आत्मसंयम की शिक्षा भी निहित थी। आज जब आधुनिक उच्च शिक्षा में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और करियर की दौड़ केंद्र में आ गई है, तब यह चिंता स्वाभाविक है कि छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक चेतना कहीं पीछे न छूट जाए। भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश इस कमी को पूरा कर सकता है। उदाहरण के लिए—गणेश, विद्या और विवेक के प्रतीक के रूप में; सरस्वती, ज्ञान और शुद्ध बुद्धि के प्रतीक के रूप में; तथा राम और कृष्ण जैसे चरित्र, नैतिक आदर्श और कर्तव्यनिष्ठा की शिक्षा देते हैं। यदि इन आदर्शों को आधुनिक पाठ्यक्रम में समुचित स्थान मिले, तो शिक्षा केवल रोजगारपरक न रहकर जीवनपरक बन सकेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी स्पष्ट कहा गया है कि शिक्षा व्यवस्था में भारतीय संस्कृति और मूल्यों का समावेश आवश्यक है। इसमें value-based education को अनिवार्य माना गया है। इसका उद्देश्य है कि छात्र केवल तकनीकी दक्षता में ही नहीं, बल्कि सामाजिक सहानुभूति, पर्यावरण चेतना और वैश्विक उत्तरदायित्व में भी अग्रणी बनें। इस दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा एक आधारभूमि प्रदान करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक शिक्षा

आधुनिक उच्च शिक्षा में सबसे बड़ी चुनौती fragmentation of knowledge की है। छात्र विज्ञान, समाजशास्त्र, साहित्य या तकनीक—सबको अलग-अलग खंडों में पढ़ते हैं। परंतु भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता यह रही कि उसने ज्ञान को समग्र रूप में देखा। आयुर्वेद में चिकित्सा केवल शरीर तक सीमित नहीं, बल्कि मन और आत्मा के संतुलन तक विस्तारित है। ज्योतिष और खगोल विज्ञान केवल तारों की गति का अध्ययन नहीं, बल्कि जीवन और प्रकृति के संबंधों का दार्शनिक विवेचन भी है। आज की दुनिया में जब multidisciplinary और interdisciplinary education की बात हो रही है, तो भारतीय दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से प्रासंगिक हो जाता है। आईआईटी, आईआईएम और अन्य प्रमुख विश्वविद्यालयों में भी यह प्रयास हो रहा है कि तकनीकी शिक्षा को कला, साहित्य और दर्शन से जोड़ा जाए। यह वही दृष्टिकोण है जो प्राचीन भारतीय शिक्षा में पहले से विद्यमान था।

[5] शिक्षा केवल रोजगारपरक नहीं, बल्कि जीवनपरक होनी चाहिए – यह दृष्टिकोण भारतीय दर्शन में पहले से मौजूद है।[6]

भारतीय ज्ञान परंपरा और वैश्विक संदर्भ

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने विश्व की सभ्यताओं को भी प्रभावित किया। बौद्ध दर्शन का चीन, जापान, कोरिया और दक्षिण–पूर्व एशिया तक प्रसार, या गणित और ज्योतिष का अरब और यूरोप तक पहुँचना, इसके प्रमाण हैं। आज जब उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण तीव्र गति से हो रहा है, तब यह आवश्यक है कि भारत अपनी इस सांस्कृतिक पूँजी का रचनात्मक उपयोग करे। भारत यदि अपनी ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा में सशक्त ढंग से प्रस्तुत करता है, तो यह न केवल उसकी soft power को बढ़ाएगा बल्कि वैश्विक बौद्धिक विमर्श में भी उसकी भूमिका मजबूत करेगा। योग और आयुर्वेद की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

चुनौतियाँ और समाधान

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक उच्च शिक्षा के समन्वय में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। पहला, यह धारणा कि परंपरागत ज्ञान केवल अतीत की धरोहर है और उसका वर्तमान में कोई वैज्ञानिक मूल्य नहीं। दूसरा, अकादमिक ढाँचे में अनुसंधान और प्रकाशनों की पद्धति प्रायः पश्चिमी प्रतिमानों पर आधारित है, जहाँ भारतीय दृष्टिकोण को अक्सर हाशिये पर रखा जाता है। तीसरा, प्रशिक्षित शिक्षकों और अद्यतन अध्ययन–सामग्री की कमी भी एक बड़ी बाधा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि—

1. भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित उच्च गुणवत्ता के शोध और प्रकाशनों को बढ़ावा दिया जाए।

2. विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में capacity building कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि शिक्षक आधुनिक और परंपरागत दोनों ज्ञान को संतुलित रूप से पढ़ा सकें।

3. छात्रों को प्रेरित किया जाए कि वे प्रोजेक्ट और शोधपत्र भारतीय दर्शन, विज्ञान और संस्कृति पर केंद्रित करें।

4. भारतीय भाषाओं में मूल स्रोत ग्रंथों का अनुवाद और सरल व्याख्या की जाए, ताकि अधिक से अधिक छात्र उन्हें समझ सकें।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत का गौरव नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए भी प्रेरणादायक है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि ज्ञान का उद्देश्य केवल व्यावसायिक सफलता न होकर , जीवन की समग्रता, समाज की भलाई और मानवता का उत्कर्ष भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में एक नई शुरुआत की है। यदि भारतीय विश्वविद्यालय और महाविद्यालय इस नीति की अंतर्निहित भावना को आत्मसात करें और अपने पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश करें, तो वह शिक्षा व्यवस्था अधिक मानवीय, मूल्यपरक और वैश्विक हो सकेगी। अतः स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक उच्च शिक्षा का समन्वय केवल शैक्षिक प्रयोग नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैश्विक नेतृत्व का आधार बन सकता है। यह वह सेतु है, जो अतीत और भविष्य को जोड़ते हुए वर्तमान शिक्षा को अधिक सार्थक और रचनात्मक बनाएगा।

संदर्भ सूची

1. शर्म, संगीता & पाण्डेय, प्रो. (2020). उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएँ एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिक. Humanities and Development. 18. 107-110. 10.61410/had.v18i1.124.
2. Sharma, Dipika & Singh, Neha. (2024). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: नये भारत के निर्माण की दिशा में : शिक्षा की चुनौतियाँ और संभावनाए. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts. 5. 10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.2614.
3. Tiwari, Praveen. (2020). भारतीय ज्ञान परम्परा में शिष्य की संकल्पना. 125-133.
4. Sirola, Debaki & Sirola, Sagar Singh. (2024). शोधालेख (शोधपत्र) क्रमांक 007 : भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (Indian Knowledge System and New Education Policy-2020). International Journal For Multidisciplinary Research. Volume 6. 10.36948/ijfmr.2024.v06i02.15952.
5. यादव, डा॰. (2025). तुलसी साहित्य के सामाजिक संदर्भ एवं भारतीय ज्ञान परंपर. International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology. 225-228. 10.48175/IJARSCT-28626.
6. Thoughts on Education from the official VidyaBharati webswww.vidyabharati.org (accessed February 6, 2007).
7. Indigenous Knowledge and Value Systems in India: Holistic Analysis of Tribal Education and the Challenge of Decentralising Control Shifting Perspectives in Tribal Studies, 2019 ISBN : 978-981-13-8089-1 Malvika Gupta, Felix Padel

8. Mandavkar, Pavan. (2025). Indian Knowledge System (IKS) and National Education Policy (NEP-2020). 10.13140/RG.2.2.22825.10088.
9. Rajput, P. & Singh, Ruchi & Joshi, Kaveri & Chari, S N. (2025). Exploring the Indian Knowledge System in the Context of Nep 2020: A Survey Based Study. International Journal of Research in Library Science. 11. 298-307. 10.26761/ijrls.11.1.2025.1854.
10. Vageeshan, Dr & Kamalakar, Dr.Gedam. (2025). Integrating Indian Knowledge System in Education: A Study of Government Reforms. International Journal of Social Science Humanity & Management Research. 04. 10.58806/ijsshmr.2025.v4i1n12.
11. Singh,V.(2020). Philosophy and Science in Ancient India: An Interdisciplinary Study. Harvard University Press.
12. Sinha, V. (2023). Role of Technology in Preserving Indigenous Knowledge: Insights from NEP 2020. Indian Journal of Digital Learning, 15(1), 56-72.
13. Mukherjee, A. (2021). Traditional Knowledge and Sustainable Development: An Indian Perspective. Routledge.
14. Mukherjee, A. (2021). Ancient Indian Scientific Knowledge and Its Relevance in the 21st Century. Research in Traditional Knowledge, 5(2), 112-130.
15. AICTE IKS Division. (2022). Indian Knowledge Systems Initiatives. Retrieved from https://iksindia.org.
16. Balasubramanian, R. (2021). Integrating Indian Knowledge Systems into Higher Education: A Policy Perspective. Journal of Indian Education Studies, 12(3), 45-58.